अथ विश्वविलाश बीसिका ।

(छन्द मञ्जु)

अवसि होत जो प्रभु की चीती मेटन वाला नहिं कोई ।
अस बिचारि सियराम नाम रटु होनी जो हुइहै सोई ॥
यह संसार अपार अनादी लोक वेद सम्मत दोई ।
समुझि न परै सांच का मिथ्या होत कहा हुइहै जोई ॥ १ ॥
प्रभु प्रेरित धरि विविधि रूप विधि श्रृष्टि बनाया करते हैं ।
तैसेही शिव अमित वेष करि जीवों को संहरते हैं ॥
विष्णू पालन करैं विश्वकर ते सब प्रभु डर डरते हैं ।
प्रेमलता सो अभय रहै नित जो सियराम उचरते हैं ॥ २ ॥
विविधि रङ्ग के जीव जक्त में सीतावर प्रगटाये हैं ।
कोइ राजा कोइ रङ्क मूढ़ कोउ पंडित चतुर बनाये हैं ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सूद्र कोउ कोउ आश्रमी कहाये हैं ।
प्रेमलता यह प्रवल पेखनों अगम बेद कहि गाये हैं ॥ ३ ॥
विविधि जाति के लोग भोग वहु योग बियोग रचाये हैं ।
दयावन्त अति दुष्ट हृदय कोउ धर्म कर्म अरुझाये हैं ॥

कोउ पापी धर्मग्य सूम कोउ ऊँच नीच कहलाये हैं।
हतै जीव कोउ करैं पालना दाहिन कोउ विमुखाये हैं॥ ४॥
पाप पुण्य गुण दोष दिवश निशि हानि लाभ सुख शोका है।
विधि निषेध गति अगति ज्ञान अज्ञान लोक परलोका है॥
प्रीति वैर भय नींद किये वहु प्रगट न कोउ तेहि रोका है।
प्रेमलता अति अनुपम रचना लखत खाय मन झोका है॥५॥
कोउ रोवै कोउ हँसै फँसै कोउ छूटा फिरै दिवाना है।
कोउ भूखा कोउ दुखी राग बश कोउ भोगनि अरुझाना है॥
अङ्ग हीन तन हृष्ट पुष्ट कोउ कोउ विनु लोचन काना है।
प्रेमलता कोउ दीन भिखारी कोउ धन मद बौराना है॥ ६॥
रहैं अधीन एक एकनि के एकनि एक अहारा है।
एक करहिं आनन्द जीव जग एक सहहिं दुख भारा है॥
एक चलहिं पग धाय दास बनि एक अश्व असवारा है।
रक्षा करहिं एक एकनि को एक एक धरि मारा है॥ ७॥
एक कहहिं सब झूठ बखानत एक सत्य संसारा है।
एक पढ़ै चहुँ वेद फिरहिं इक भेद विहीन गमारा है॥
कोउ बूड़त कोउ तरत मरत कोउ त्रिविध ताप नित जारा है।
प्रेमलता सियराम सुमिर तू ये प्रभु विश्व विहारा है॥८॥
कोउ जीवै कोउ मरै जरै कोउ तोहि कहा दरकारा है।
प्रभु लीला लखि नयन बयन मन रोकि उतरु भवपारा है॥
जो जोइ बवै लुनै सो सोइ फल कर्म प्रधान उचारा है।

प्रेमलता अस जानि ठानि प्रण भजु सियराम उदारा है ॥९॥
भलो बुरो कोउ करै कर्म जग तोहिं कछु लाभ न हानी है।
पाप पुन्य जो करत भरत सो तू जनि मान गलानी है॥
पर गुण दोष जानि सम दम करि भजु सियबर धनुपानी है।
रगरि झगरि केहि लागि नशावत प्रेमलता जिदगानी है ॥१०॥
जो प्रभु रचो मीन गो बकरी सोइ प्रभु मल्हा कशाई है।
चिउँटी से ब्रह्मालगि रचिकर संगइ मृत्यु लगाई है॥
करि निमित्त प्रभु प्रेरित मौति सु मारत अवसर पाई है।
प्रेमलता अति अटर कहहिं श्रुति हरि इच्छा प्रभुताई है॥११॥
तू आपन दिशि हेरि करै का करनो अति दुखदाई है।
आनहिं केहि लगि ज्ञान सिखावत राग विराग दृढ़ाई है॥
कोउ कछु करै तोहि का मतलब जानैं सिय रघुराई है।
प्रेमलता जो खाय सकल जग सो तेरेउ शिर छाई है ॥१२॥
स्वर्ग नर्क अनरीति नीति गति मति किसने प्रगटाई है।
सब कहँ विदित न छिपी बात यह प्रगटहिं देत दिखाई है॥
चलत न पवन हिलत नहिं पल्लव सियवर रुख विनु पाई है।
उद्भव पालन प्रलय करैं सोइ प्रेमलता जोइ भाई है ॥ १३ ॥
मशकहि करैं बिरञ्चि विष्णु कहँ करैं मशक तेउ छोटा है।
खोटेइ करैं खरा पल छिन में खरेइ करैं अति खोटा है॥
शरणागत प्रतिपाल सियावर कौशल्या कर ढोटा है।
प्रेमलता भजु ताहि तर्क तजि परै न कबहूं टोटा है ॥ १४ ॥

छण छण छीजत जात सु आयू ज्यों जल घुरै बतासा है।
जक्त प्रपञ्च न भूलि जानि यह श्रीसियराम बिलासा है॥
करत भरत संहरत दिवश निशि तोकों का कछु त्रासा है।
लखि मालिककी मौज मगनरहु केहि लगि होत उदासा है॥१५॥
कियो करार गर्भ में जो तू सो करु त्यागि दुराशा है।
नतरु पाइ है बहुरि दुसह दुख देखत कहा तमाशा है॥
प्रभु अनुकूल होइ निशि वासर करु इकन्त थल बासा है।
प्रेमसुलता सनेम निरन्तर रटहु नाम प्रति श्वासा है॥१६॥
अन्ध बधिर हुइ मूक रहिय जग पाप पुन्य ते न्यारा है।
साधे निज परलोक चतुर सोइ तजि जग मोह पसारा है॥
प्रभु इच्छा जो होय लखै सो नैननि सहित विचारा है।
गुण औगुन नहिं गहै किसी के रटै नाम युग प्यारा है॥१७॥
मारै मरै कटै काटै कोउ करहि सुनीक विकारा है।
तू न विलोकि बोलु जनि तिन्हि सन करना उचित किनारा है॥
है उञ्चास कोटि योजन महि ठाम अनूप अपारा है।
प्रेमलता तहँ निवसि रटिय मुख नाम नशै दुख भारा है॥१८॥
तेरे घर में आग लगी है तिस्को नहीं बुझावत है।
धुआं करब जनि कोउ नगर में कहि आनहिं समुझावत है॥
आपु नयन विनु गिरै कुए में आनहिं पन्थ सुझावत है।
प्रेमलता निज विपति जालमें फँस्यो परहिं सुरझावत है॥१९॥
एकनि ते अस्नेह एक सन बैर विरोध बढावत हैं।

इसमें कहु का नफा मिलै तोहि नाहक जीव जरावत है ॥
प्रभु निज माया प्रेरि नचावत सबहिं जीव जग जावत है ।
प्रेमलता यह ज्ञान आनि उर कसन नाम मुख गावत है ॥२०॥
बार बार समुझाय कही मैं नीति बेद जो भाखी है ।
है है विश्वावीस अवसि सो जो प्रभु ने रचि राखी है ॥
अस विचारि चलु सबते हिलिमिलि होउ न मधुकी माखी है ॥
प्रेमलता रटु नाम याम बशु पैहै सुख शिव साखी है ॥२१॥

दोहा ।

बिश्व विलाश सु बोसिका, पढ़ै सुनै मन लाय ।
प्रेमलता सियराम रति, पावै भव भ्रम जाय ॥ १ ॥
सुखद एक सब जीव हित, श्री सियराम सुनाम ।
प्रेमलता संसार में, भरे सकल दुख धाम ॥ २ ॥
मिले बहुत प्रेमी जगत, पै मतलब के यार ।
प्रेमलता श्रीनाम सम, नहिं कोउ मीत उदार ॥ ३ ॥

❀ इति ❀

इति श्री विश्वविलास बोसिका-जय सियराम जयजय
सियराम नाम ध्वनि प्रचारक परमहंस श्री १०८
श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम
'श्रीप्रेमलता जू' कृत

समाप्त शुभम् ॥ २ ॥